उर्वरकों के समुचित एवं संतुलित प्रयोग के लिए "धान-गेहूँ फसल प्रबन्धक (RWCM)"

CSISA सूचनापत्र | www.CSISA.org

- संतुलित उर्वरकों का प्रयोग और उचित/उत्तम खेत प्रबंधन फसल की बेहतर पैदावार एवं आय वृद्धि की कुंजी हैं।
- आमतौर पर मिट्टी जांच के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग उपयुक्त पाया जाता है, लेकिन मिट्टी जांच हेतू सुविधाएं उपलब्ध नहीं होने के कारण ज़्यादातर किसान मिट्टी जांच नहीं करा पाते है।
- वैकल्पिक रूप से किसान "धान-गेहूँ फसल प्रबंधक (RWCM)" द्वारा बताए गए उर्वरकों का प्रयोग कर अच्छी उपज ले सकते है।

"धान-गेहूँ फसल प्रबन्धक (RWCM)" क्या है?

- यह वेब (web) और मोबाइल आधारित तकनीक है जिसके द्वारा धान एवं गेहूँ की फसलो के लिए संतुलित मात्रा मे उर्वरक की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- यह विज्ञान आधारित सिद्धांतों पर फसलों की आवश्यकतानुसार प्रत्येक खेत के लिए विशेष पोषक तत्व प्रबंधन करने की एक खास तकनीक है।
- पोषक तत्वों का आकलन लक्ष्य फसल की उपज व फसल प्रतिक्रिया के समावेश के आधार पर किया गया है।

http://webapps.irri.org/in/brup/rwcm

"धान-गेहूँ फसल प्रबन्धक" की आवश्यकता क्यों?

- वर्तमान समय मे राज्य सरकार पूरे राज्य के लिए उर्वरक की सामान्य सिफ़ारिश देती है।
- परंतु फसल चक्र व उसका प्रबधन एवं विभिन्न परिस्थितिकी के अनुसार प्रत्येक खेत के लिए विशेष पोषक तत्व प्रबंधन जरूरी है।

©CSISA 2015 . Attribution – Non Commercial-ShareAlike 4.0 (Unported)

किसान के परंपरागत विधि वाले प्लाट की तुलना मे RWCM प्लाट मे आय मे वृद्धि देखी गयी है।

यह कैसे काम करता है?

- इस तकनीक मे प्रत्येक खेत का कृषि प्रबंधन जैसे लगाये जाने वाले प्रजाति/संकर किस्मों का नाम, बुआई की तिथि, बुआई/रोपाई का तरीका, पिछली फसल की कटाई की जानकारी, फसल चक्र, सिंचाई प्रबंधन, पिछली फसल के अवशेष की जानकारी, लगाई जाने वाली फसल मे खर-पतवार की जानकारी किसानो से पूछकर सर्वर मे अपलोड करते है।
- इन सूचनाओ के विश्लेषण तथा अपेक्षित उपज के आधार पर यह तकनीक किसानों के पास उपलब्ध खादों/ उर्वरकों के रूप मे धान तथा गेहूँ फसल के लिए उर्वरक की मात्रा तथा फसल प्रबंधन के बारे मे दिशा-निर्देश देता है।
- किसान अपने सभी खेतों के लिए उर्वरक की मात्रा तथा फसल प्रबंधन के बारे मे दिशा-निर्देश प्राप्त कर सकता है। इस तकनीक द्वारा किसानों की आय बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

प्रारंभिक परिणाम

- CSISA परियोजना एवं सहयोगियो द्वारा किसानों के खेतों में किए गये परीक्षण में किसान के परंपरागत विधि वाले प्लाट की तुलना मे आरडब्लूसीएम (RWCM) प्लाट मे उपज मे वृद्धि या उर्वरक उपयोग मे कमी अथवा दोनों के माध्यम से आय मे वृद्धि देखी गयी है।
- पिछले वर्ष धान की फसल मे हमने कई किसानों के खेत पर इसका परीक्षण किया, जिसमे किसानों के प्रचलित उर्वरक उपयोग और क्राप मैनेजर (Crop Manager) द्वारा सुझाए गए उर्वरक का उपयोग किया गया, जिसके कुछ उदाहरण हम यहाँ दे रहे है:

किसान के बारे में		नाइट्रोजन (कि.ग्रा./हे.)	फास्फोरस (कि.ग्रा./हे.)	पोटाश (कि.ग्रा./हे.)	जिंक (कि.ग्रा./हे.)	उपज (टन/हे.)
नारायण सिंह, ग्राम सुअरी, प्रखंड गड़हनी, जिला भोजपुर, धान की प्रजाति - Arize-6444	परंपरागत विधि	128	46	0	3	6.13
	RWCM	**144**	**28**	**45**	**8**	**7.37**
जग्गन पांडेय, ग्राम सरैया, प्रखंड सिमरियावा, जिला सन्तकबीर नगर, धान की प्रजाति - MTU-7029	परंपरागत विधि	195	58	0	0	4.49
	RWCM	**144**	**28**	**60**	**8**	**6.28**

धान-गेहूँ फसल प्रबन्धक के अनुसार खादों/ उर्वरकों की मात्रा के प्रयोग से किसान को अधिक पैदावार प्राप्त हुई

CSISA को नयी प्रजातियों, स्थायी फसल प्रबंधन प्रौद्योगिकियों तथा नीतियों के त्वरित विकास और समावेशी परिनियोजन के माध्यम से दक्षिण एशिया में कृषि उत्पादकता और संसाधन से गरीब खेतिहर परिवारों की आय बढ़ाने के लिए चलाया गया है। इस परियोजना का कार्यान्वयन CIMMYT, IFPRI, ILRI तथा IRRI द्वारा किया जा रहा है।

©CSISA 2015 . Attribution – Non Commercial-ShareAlike 4.0 (Unported)